ॐ 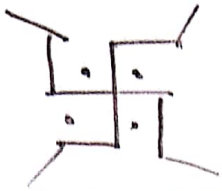

ॐ श्री गणेशाय नमः!!
ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते
जय त्वम् देवि चामुण्डे। जय भूर्तिहारिणी।
जय सर्वगते देवि। कालरात्रि नमोस्तुते

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चैः

Scanned by CamScanner

एक सन्यासी के लिए न कोई शत्रु है, न कोई मित्र, न कोई अपना, न कोई पराया, बस सत्य है तो साधना वह उसके लिए प्रेम ।।

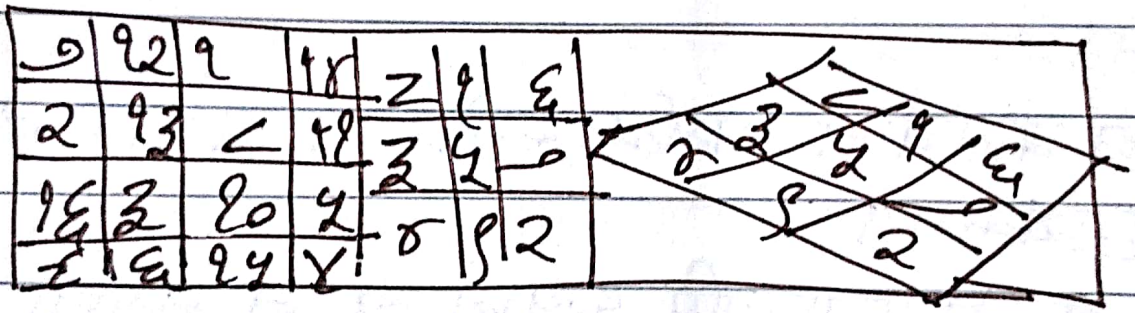

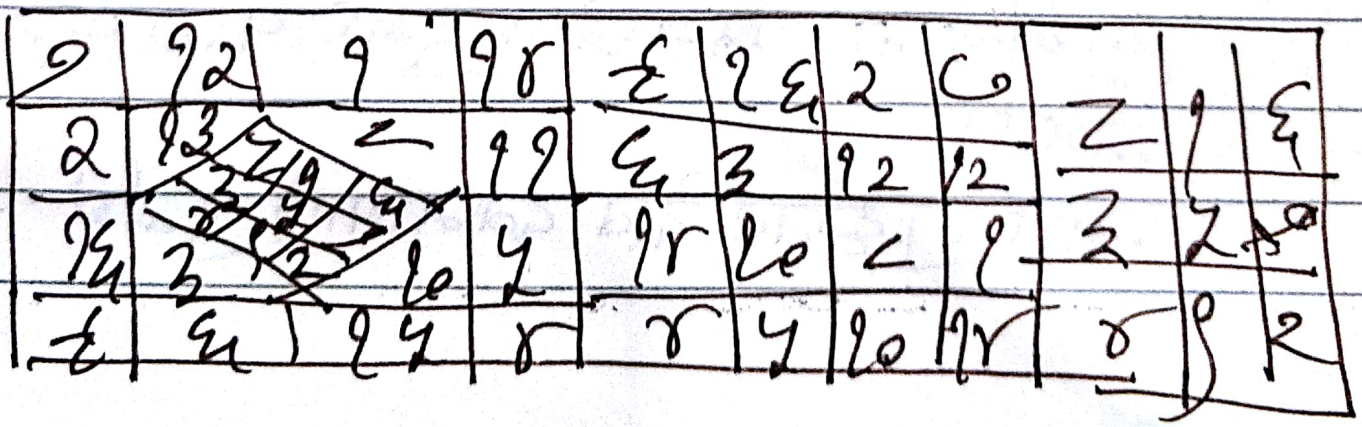

छिन्नमस्ता जापो जाप
आप कटन्ते आपे आप
जो योगी करे सुमिरण
पाप पुण्ये से न्यारा रहे

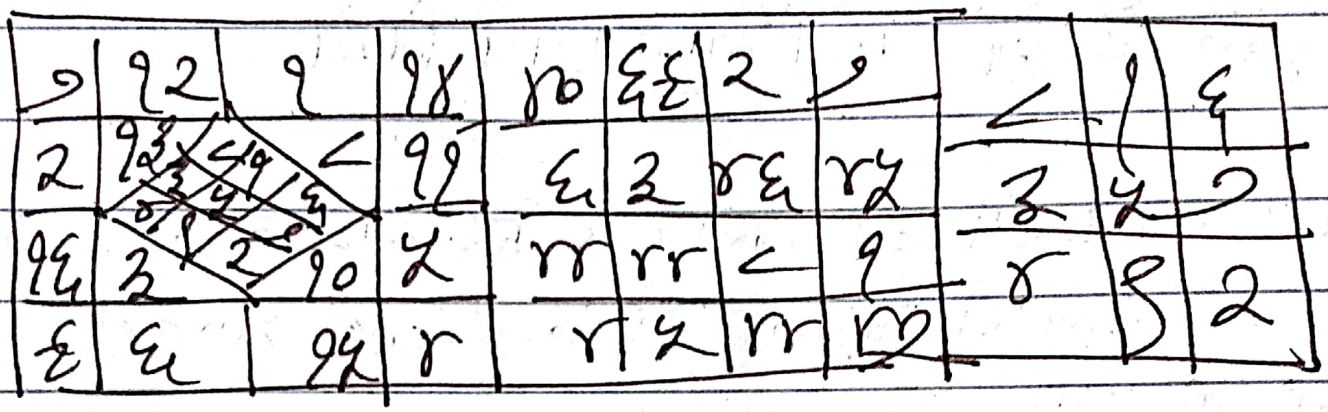

शिव उवाच- शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुब्जिका स्तोत्र मुत्तमम्।

येन मन्त्रप्रभावेण चण्डी जापः शुभो भवेत।

न कवचं नार्गला स्तोत्रं न कीलकं न रहस्यकम्।

न सूक्तानापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम

कुब्जिका पाठमात्रेण दुर्गा पाठ फलं लभेत।

अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभं

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वती
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भोच्चाटनादिकम्
पाठमात्रेण संसिद्ध्येत कुञ्जिकास्तोत्रमुत्तमम्।

मन्त्र:
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
ॐ ग्लौं हूं क्लीं जूं स: ज्वालय ज्वालय
ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट्
स्वाहा।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनी
नम: कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनी
नमस्ते शुम्भहन्त्रे च निशुम्भासुरघातिनी

जाग्रतं हि महादेवी। जपं सिद्धं कुरुष्व मे
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।

चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी
विच्चे: चाभयदा रूपां नमस्ते मन्त्ररूपिणी

धां धीं धूं धूर्जटते पत्नी। वां वीं वूं वागधीश्वरी
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवी। शां शीं शूं मे शुभंकुरु

हूं हूं हूंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नम:

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं
क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं
कुरु कुरु स्वाहा

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा। खां खीं खूं खेचरी
तथा
म्लां म्लीं म्लूं मूलविस्तीर्ण कुंजिकायै नमो नम:।

सां सीं सूं सप्तशतीदेव्या मंत्रसिद्धि कुरुष्व मे।

इदं तु कुंजिका स्तोत्रं मंत्र जागृति हेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वती।

यस्तु कुंजिका देवी हीनां सप्तशती पठेत।
न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।

Scanned by CamScanner

इति रुद्रयामले गौरीतंत्रे शिव पार्वती संवादे
कुंजिका स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

Scanned by CamScanner

ॐ

नवर्ण मन्त्र

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे:

→ [तेल का दीपक]

[विधी]

(विनियोग) ÷ ॐ गणपतिर्जयति

ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मा विष्णु रुद्र ऋषय: गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता: ऐं बीजं ह्रीं शक्ति: क्लीं कीलकं श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:

[इसे पढ़कर जल गिराऐं]

(न्यास :) [दाहिने हाथ की अंगुली से]

ब्रह्मविष्णुरुद्र ऋषिभ्यो नम: शिरसी [सिर]

गायत्र्युष्णिगनुष्टुपछन्दोभ्यो नम: मुखे

महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवाभ्यो नम: हृदि

ऐं बीजाय नम: गुह्ये

ह्रीं शक्तये नम: पादयो: [दोनों चरण]

क्लीं कीलकाय नम: नाभौ [नाभि]

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे:
(इस मूल मन्त्र से हाथों की शुद्धि कर करन्यास करें)

करन्यास:

ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नम:
(हाथों की तर्जनी से अंगुष्ठ का स्पर्श)
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम: (अंगूठे का तर्जनीयों से स्पर्श)
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नम:
(अंगुष्ठ से मध्यमा का स्पर्श)
ॐ ~~क्लीं~~ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नम:
(अनामिका का अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ विच्चे: कनिष्ठिकाभ्यां नम: (कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श)

Scanned by CamScanner

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (हथेलियों और उनके पृष्ठभागों का परस्पर स्पर्श)

हृदयादिन्यास

(दाहिने हाथ की अंगुलियों से स्पर्श)

ॐ ऐं हृदयाय नमः (हृदय).

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा (सिर)

ॐ क्लीं शिखायै वषट् (शिखा).

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम् (दाहिने हाथ की अंगुलियों से बाएं कंधे तथा परस्पर)

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र और ललाट को स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट् (दाहिने हाथ को बाएं ओर से सिर से घुमाकार तर्जनी और मध्यमा से बाएं हाथ की हथेली पर ताली बजाएं)

Scanned by CamScanner

अक्षरन्यास:

ॐ ऐं नमः शिखायाम्
ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे
ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे
ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे
ॐ मुं नमः वामकर्णे
ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे
ॐ यां नमः वामनासापुटे
ॐ विं नमः मुखे
ॐ च्यें नमः गुह्ये

Scanned by CamScanner

दिक्न्यास

ॐ ऐं प्राच्यै नमः
ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः
ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः
ॐ क्लीं वायव्यै नमः
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः

Scanned by CamScanner

ध्यानम्

खड्गं चक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं
मधु कैटभम्।

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं
धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्

घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः
सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशु
तुल्यप्रभाम्

गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां
महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि
दैत्यार्दिनीम्

ॐ

मन्त्र द्वारा माला की पूजा

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः

(जप).

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्

सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरी

(देवी के वाम हस्त में जप निवेदन)

Scanned by CamScanner

Saptsati | Saptshloki (4th chap) 11th ch
Most Mantra | Devi Sooktam (8 verse)

ॐ कात्यायनि च विद्महे कन्याकुमारी च
धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् |

Scanned by CamScanner

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली
कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री
स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे:

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

८	१	६
३	५	७
४	९	२

९	१६	२	७
६	३	११	१२
१४	१०	८	१
४	५	१०	१४

जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतापहारिणी
जय सर्वगते देवी कालरात्रि नमोऽस्तुते।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली
कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री
स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।

Scanned by CamScanner

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा
नमोऽस्तुते।

२	१	६
३	५	७
४	९	२

Scanned by CamScanner

स्वविग्रहणे आचमनं

① ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
② ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
③ ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
④ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः स्वाहा

मंत्र जाप

① ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै ॐ दुर्गायै नमः
यथा शक्ति अथवा अपनी
श्रद्धानुसार ।।

② ॐ ~~कामख्या~~ कामाख्या ऐं क्लीं नमः

③ ॐ ह्रीं श्रीं कोटगाड़ी देवी ~~नमः~~

Scanned by CamScanner

ॐ

नमो नमो दुर्गा सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुखहरनी ।।
निराकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूं लोक फैली उजियारी ।।
शशि ललाट मुख महाविशाला ।नेत्र लाल भृकुटी विकराला ।।
रूप मातु को अधिक सुहावे । दरस करत जन अति सुख पावे ।।
तुम संसार शक्ति लय कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ।।
अन्नपूर्णा हुई जगपाला । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ।।
प्रलयकाल सब नाशन हारी तुम गौरी शिवशंकर प्यारी ।।
शिवयोगी तुम्हारे गुण गावें ।ब्रहमा विष्णु तुम्हें नित ध्यावें ।।
रूप सरस्वती का तुम धारा ।दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा ।।
धरयो रूप नरसिंह को अम्बा ।प्रगट भई फाड़ के खम्भा ।।
रक्षा कर प्रहलाद बचायो ।हिरण्याक्ष को स्वर्ग पठायो ।।
लक्ष्मी रूप धरो जगमाहीं ।श्री नारायण अंग समाही ।।
क्षीर सिंधु में करत बिलासा ।दया सिंधु दीजै मन आशा ।।
हिंगलाज में तुम्ही भवानी ।महिमा अमित न जात बखानी ।।
मातंगी धूमावति माता ।भुवनेश्वरी बगला सुखदाता ।।
श्री भैरव तारा जगतारिनि ।छिन्न भाल भव दुःख निवारिनि ।।
केहरि वाहन सौह भवानी ।लंगुर बीर चलत अगवानी ।।
कर में खप्पर खंग बिराजे ।जाको देखि काल डर भाजे ।।
सोहे अस्त्र शस्त्र और तिरशूला ।जाते उठत शत्रु हिय शूला ।।
नगरकोटि में तुम्हीं विराजत ।तिहूं लोक में डंका बाजत ।।
शुंभ निशुम्भ दानव तुम मारे ।रक्त बीज संखन संहारे ।।
महिषासुर नृप अति अभिमानी ।जोहि अघ भारि मही अकुलानी ।।
रूप कराल कालिका धारा ।सेन सहित तुम तेहि संहारा ।।
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब ।भई सहया मातु तुम तब तब ।।
अमरपुरी अरु बासव लोका ।तव महिमा सब रहे अशोका ।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी ।तुम्हें सदा पूजे नरनारी ।।
प्रेम भक्ति से जो जस गावै ।दुःख दारिद्र निकट नहिं आवे ।।
ध्यावें तुम्हें जो नर मन लाई ।जन्म मरन ते सो छुटी जाई ।।
योगी सुरमुनि कहत पुकारी ।योग न होय बिन शक्ति तुम्हारी ।।
शंकर आचारज तप कीनो ।काम क्रोध जीतै सब लीनो ।।
निशिदिन ध्यान धरत शंकर को ।काहू काल नहीं सुमिरो तुमको ।।
शक्ति रूप को मरम न पायो ।शक्ति गई तब मन पछतायो ।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी ।जय जय जय जगदम्ब भवानी ।।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।दई शक्ति नहीं कीन विलंबा ।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो ।तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ।।
आशा तृष्णा निपट सतावै ।रिपु मूरख मोही अति डर पावै ।।
शत्रु नाश कीजै महारानी ।सुमिरो इक चित्त तुम्हें भवानी ।।

करो कृपा हे मातु दयाला ।ऋद्धि सिद्धि दे करहू निहाला ।।
जब लगि जियो सदा फल पाऊं ।[illegible] ।। तुम्हरे यश मैं सदा सुनाऊँ।
[illegible] ।
दुर्गा चालीसा जो नर गावैं। सब सुख भोग परम पद पावैं।
देवीदास शरण। निज जानी। करहु कृपा जगदम्ब भवानी। ॐ

Scanned by CamScanner